International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

वित्त वर्ष 2023–24 एवं 2024–25 में भारत की विकास दर

डा0 अनीता जैन
मानदेय प्रवक्ता अर्थशास्त्र,
जैन स्थानकवासी गर्ल्स डिग्री कालिज,
बड़ौत– 250611 (बागपत)

डा0 मुकेष कुमार,
से0नि0 एसो0 प्रो0 वाणिज्य विभाग,
दिगम्बर जैन कॉलिज,
बड़ौत– 250611 (बागपत)

सारांशिका

वित्त वर्ष 2022–23 में भारत की विकास दर 7.2 प्रतिशत रही थी। आरबीआई ने वित्त वर्ष 2023–24 में विकास दर 7.6 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की थी। एडीबी ने वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर 7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था और संभावना व्यक्त की थी कि विश्व में केवल उत्तरी प्रशांत महासागर में स्थित छोटा सा द्वीप प्लाऊ, जिसकी इकोनमी का आकार महज 30 करोड डालर है, की विकास दर भारत से ज्यादा यानि 8 प्रतिशत रह सकती है। अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर 7. 6–7.8 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था, लेकिन मैन्यूफेक्चरिंग और कन्सट्रक्शन प्रत्येक में 9.9 प्रतिशत की वृद्धि के चलते वास्तविक विकास दर 8.2 प्रतिशत रही है। इसी के साथ भारत लगातार 2 वर्षो तक दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेज गति से आर्थिक विकास दर हासिल करने वाला देश बन गया है। आरबीआई का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2024–25 में विकास दर 7.2 प्रतिशत रहेगी। एडीबी–वित्त वर्ष 2024–25 लगातार 5वां ऐसा साल होगा जब भारत की विकास दर चीन से ज्यादा रहेगी। फिच रेटिंग्स– वित्त वर्ष 2024–25 में भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ने वाले देशों में एक होगा। एडीबी– ''वित्त वर्ष 2024–25 में भारतीय इकोनमी पूरे एशिया मे विकास का मुख्य इंजन रहेगी।'' 10 वर्ष पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था 1.9 ट्रिलियन डालर की थी। एसएंडपी– ''नवम्बर 2023 तक भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 3.75 ट्रिलियन डालर से अधिक हो गया था। अगले 3 वर्ष तक भारत सबसे तेज गति से विकास करने वाला देश होगा।'' अगर वित्त वर्ष 2024–25 में भी विकास दर अनुमान के मुताबिक 7 प्रतिशत रहती है तो कोरोना काल के बाद लगातार 7 प्रतिशत की विकास दर (तेज आर्थिक विकास दर) हासिल करने वाला दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में एक मात्र देश भारत होगा। आरबीआई– भारत की अर्थव्यवस्था एक दशक तक तेज आर्थिक विकास दर हासिल करने के लिए तैयार है। बार्कलेज– वर्ष 23028 तक भारत 8 प्रतिशत की विकास दर हासिल कर सकता है जो चीन से ज्यादा होगी।

की वर्डः विकास दर, अर्थव्यवस्था, आरबीआई, आईएमएफ, ट्रिलियन, इन्फ्रास्ट्रक्चर

वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर

यू एन, नौमुरा, गोल्डमेन सैक्च आदि ने वर्ष 2023/वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर 7 प्रतिशत से कम रहने का अनुमान लगाया था, जबकि अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर 7.6–7.8 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था। वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर के अंतिम पूर्वानुमानों को तालिका–1 में दिखाया गया है।

तालिका–1

वित्त वर्ष 2023–24 में भारत की विकास दर के अंतिम पूर्वानुमान (प्रतिशत में)

संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर
यू.एन*	6.3	एडीबी	7	क्रिसिल	7.6	IMF	7.8	मार्गन स्टेनली	7.9
नौमुरा	6.7	विश्व बैंक	7.5	S&P	7.6	फिच	7.8	मूडीज रेटिंग्स	8
गोल्डमेन सैक्च*	6.7	फिक्की	7.5	डेलाइट इंडिया	7.6-7.8	OECD	7.8	SBI इकोरैप	8
इंडिया रेटिंग्स	6.9-7.0	एनएसओ	7.6	बार्कलेज	7.8	DBS*	7.8-8	वी अनंत नागेश्वरन	8

*वर्ष 2023

एसबीआई इकोरैप, आरबीआई ने वित्त वर्ष 2023–24 की प्रथम तिमाही में 8 प्रतिशत विकास दर रहने का अनुमान लगाया था, जबकि मार्गन स्टेनली ने 7.4 प्रतिशत विकास दर रहने का अनुमान लगाया था लेकिन इस तिमाही में वास्तविक विकास दर 8.2 प्रतिशत (प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक) रही और जीडीपी 37.44 लाख करोड रू0 से बढकर 40.37 लाख करोड रूपये हो गया। इस तिमाही में चीन की विकास दर 6.3 प्रतिशत रही। द्वितीय तिमाही में एसबीआई इकोरैप ने विकास दर 6.9–7.1 प्रतिशत रहने तो आरबीआई ने 6.5 प्रतिशत रहने का अनुमान का अनुमान लगाया था, लेकिन वास्तविक विकास दर 8.1 प्रतिशत रही और जीडीपी 38.78 लाख करोड रू0 से बढकर 41.74 लाख करोड रूपये हो गया। तृतीय तिमाही में एसबीआई इकोरैप ने विकास दर 6.7–6.9 प्रतिशत, आरबीआई एवं जर्मन डायचे बैंक ने 7 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया था, जबकि वास्तविक विकास दर 8.6 प्रतिशत रही। चतुर्थ तिमाही में एसबीआई इकोरैप ने 7.4 प्रतिशत तो आरबीआई ने 7.3 प्रतिशत विकास दर रहने का अनुमान लगाया था, जबकि वास्तविक विकास दर 7.8 प्रतिशत रही। वित्त वर्ष 2023–24 में वास्तविक विकास दर 8.2 प्रतिशत रही और जीडीपी 160.71 लाख करोड रूपये से बढकर 173.82 लाख करोड रूपये हो गया।

वित्त वर्ष 2024–25 में भारत की विकास दर

आरबीआई ने वित्त वर्ष 2024–25 की प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ तिमाही में विकास दर क्रमश 7.3, 7. 2, 7.3 एवं 7.2 रहने एवं पूरे वित्त वर्ष में 7.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। वित्त वर्ष 2024–25 में भारत की विकास दर के अद्यतन पूर्वानुमानों को तालिका–2 में दिखाया गया है।

तालिका– 2

वित्त वर्ष 2024–25 में भारत की विकास दर के अद्यतन पूर्वानुमान (प्रतिशत में)

संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर	संस्थान	विकास दर
यू.एन*	6.2	मूडीज रेटिंग्स	6.6	गोल्डमेन सैक्च*	6.9	ADB	7.2
अंकटांड*	6.5	IMF	6.8	बार्कलेज	7.0	NCAER	7.0-7.5
डेलाइट इंडिया	6.6	मार्गन स्टेनली	6.8	DBS *	7.1	फिक्की	8.0
विश्व बैंक	6.6	S & P	6.8	इंडिया रेटिंग्स	7.1	CII	8.0
OECD	6.6	क्रिसिल	6.8	फिच रेटिंग्स	7.2	PHDCCI	8.0-8.3

*वर्ष 2024

वित्त वर्ष 2025–26 में भारत की विकास दर मार्गन स्टेनली एवं फिच रेटिंग्स ने 6.5 प्रतिशत, OECD ने 6. 6 प्रतिशत, विश्व बैंक ने 6.7 प्रतिशत, डेलाइट इंडिया ने 6.75 प्रतिशत एवं एसएंडपी ने 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। IMF का अनुमान है कि अगले 5 वर्षो के दौरान लगातार भारत की विकास दर करीब 6.3 प्रतिशत के आसपास रहेगी। PHDCCI का अनुमान है कि अगले 2–3 वर्ष विकास दर 6.7 प्रतिशत रहेगी। वी अनंत नागेश्वरन का मत है कि वर्ष 2030 तक भारत की विकास दर 6.5–7.0 प्रतिशत रह सकती है, जबकि नौमुरा को अगले 5 वर्ष भारत की विकास दर 7.0 प्रतिशत रहने की सम्भावना है।

वर्ष 2023 एवं वर्ष 2024 में वैश्विक विकास दर

विगत 2 दशक की वैश्विक विकास दर औसतन 3.8 प्रतिशत रही है। आईएमएफ के अनुसार वैश्विक विकास दर वर्ष 2023 में 3.2 प्रतिशत, वर्ष 2024 में 3.2 प्रतिशत एवं वर्ष 2025 में 3.2 प्रतिशत रहने का अनुमान है। फिच ने वर्ष 2023 में 2.9 प्रतिशत, वर्ष 2024 में 2.6 प्रतिशत और वर्ष 2025 में 2.4 प्रतिशत वैश्विक विकास दर रहने का अनुमान लगाया है। एसएंडपी के अनुसार वैश्विक विकास दर वर्ष 2023 में 2.5 प्रतिशत, वर्ष 2024 में 2.6 प्रतिशत और वर्ष 2025 में 2.6 प्रतिशत रहेगी। ओईसीडी को वर्ष 2023 में 2.9 प्रतिशत और वर्ष 2024 में 2.7 प्रतिशत वैश्विक विकास दर रहने का अनुमान है। अकटांड के अनुसार वर्ष 2024 में वैश्विक विकास दर 2.6 प्रतिशत रहेगी। विश्व बैंक ने वर्ष 2024 में वैश्विक आर्थिक वृद्धि के 2.6 प्रतिशत पर स्थित रहने और अगले 2 वर्षो (वर्ष 2025 एवं वर्ष 2026) में 2.7 प्रतिशत हो जाने का अनुमान जताया है। आईएमएफ को वर्ष 2023 में विकास दर

अमेरिका में 1.8 प्रतिशत, चीन में 4.2 प्रतिशत (वर्ष 2024 में 5 प्रतिशत) जर्मनी ने –0.3 प्रतिशत एवं जापान ने 1.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है। एडीबी के अनुसार वर्ष 2023 में चीन की विकास दर 4.8 प्रतिशत और वर्ष 2024 में 4.5 प्रतिशत रहेगी। फिच के अनुसार वर्ष 2023 में चीन की विकास दर 5.3 प्रतिशत, वर्ष 2024 में 4.8 प्रतिशत और वर्ष 2025 में 4.5 प्रतिशत, अमेरिका में वर्ष 2023 में 2.4 प्रतिशत, वर्ष 2024 में 2.1 प्रतिशत और वर्ष 2025 में 1.5 प्रतिशत रहेगी। ओईसीडी का अनुमान है कि वर्ष 2023 में अमेरिका की विकास दर 2.3 प्रतिशत और चीन की 5.2 प्रतिशत रहेगी, जबकि वर्ष 2024 में अमेरिका की 1.5 प्रतिशत, चीन की 4.7 प्रतिशत और यूरोपीय यूनियन की 0.9 प्रतिशत रह सकती है। मूडीज का अनुमान है कि वर्ष 2024 व वर्ष 2025 में चीन की विकास दर 4 प्रतिशत रहेगी जबकि दशक के शेष सालों में (वर्ष 2026 से 2030 तक) 3.8 प्रतिशत रहेगी।

जुलाई–सितम्बर 2023 में अमेरिका की अर्थव्यवस्था 5.2प्रतिशत की दर से बढी है। यह विगत 2 वर्षो की सबसे तेज विकास दर है, जबकि इस अवधि में चीन की विकास दर 4.9 प्रतिशत, जर्मनी की –0.1 प्रतिशत तथा जापान की –3.3 प्रतिशत, रही है। अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के अनुसार पिछले 4 दशक से विकास की जिस राह पर चीन आगे बढ रहा था, अब उसके अवसान का समय आ गया है। चीनी अर्थव्यवस्था में गिरावट की प्रमुख वजह है– वैश्विक स्तर पर चीन के खिलाफ माहौल बनना, कार्यशील कामगारो की आबादी कम होना, रियल एस्टेट में जरूरत से ज्यादा निवेश जिसको अब बनाकर रखना मुश्किल है। दर्जनो रियल एस्टेट डेवलपर के डिफाल्ट होने के चलते दुनिया की दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था वर्ष 2020 से धीमी गति से प्रगति कर रही है। इस संकट के चलते चीन के कई बैंको के सामने अपना अस्तित्व बचाना मुश्किल हो रहा है। अनुमान है कि चीन की वृद्धि दर में वर्ष 2027 से गिरावट शुरू होगी। वर्ष 2028 में चीन की विकास दर 4 प्रतिशत पर आ जायेगी। विकास दर 4–4.5 प्रतिशत रहने से वैश्विक जीडीपी मे चीन का योगदान 33 प्रतिशत से कम होकर वर्ष 2028 तक 26 प्रतिशत रह जायेगा।

जर्मनी में इससे पूर्व की दो तिमाहियों में भी गिरावट रही थी और लगातार 3 तिमाही में विकास दर में गिरावट को मंदी का संकेत माना जाता है। जापान में वर्ष 2023 की तृतीय तिमाही में विकास दर –3.3 प्रतिशत, चतुर्थ तिमाही में –0.4 प्रतिशत और पूरे वर्ष में 1.9 प्रतिशत रही है। द्वितीय छमाही में विकास दर नकारात्मक रहने से जापान की अर्थव्यवस्था मंदी की चपेट में आ गयी और वैश्विक स्तर पर तीसरे से चौथे स्थान पर आ गयी। जर्मनी और जापान की अर्थव्यवस्थायें छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों द्वारा संचालित है। पिछली सदी के 8वें दशक तक जापान की अर्थव्यवस्था में उत्तरोत्तर बढ़ोतरी होती रही, लेकिन पिछले 30 सालों के दौरान ऐसा बहुत कम बार हुआ जब अर्थव्यवस्था में वृद्धि हुई। जापान की धीमी वृद्धि के पीछे 2 प्रमुख कारण है। एक जापान में श्रम बल की कमी। इस कमी को पूरा करने के लिए अप्रवासी मजदूर एक विकल्प है, लेकिन जापान दूसरे देशों के कार्यबल को लेकर बहुत इच्छुक नही है। दूसरे मजदूरी दरों में बढ़ोतरी न होना। इस कारण लोग खुलकर खर्च नही कर रहे है और कारोबारी सिकुडते घरेलू बाजार के बजाए विदेश में तेजी से बढ रही अर्थव्यवस्थाओं में निवेश कर रहे है। ब्रिटेन में वर्ष 2023 की तृतीय तिमाही में –0.1 प्रतिशत विकास दर रही है। चतुर्थ तिमाही में –0.3 प्रतिशत विकास दर रही है। पूरे वर्ष में 0.1 प्रतिशत विकास दर रही है। श्रीलंका में अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर लगातार 6 तिमाहियों में नकारात्मक रहने के बाद अक्टूबर–दिसम्बर 2023 में 4.5 प्रतिशत रही है।

वर्ष 2023 की शुरूआत में भारत और चीन को सबसे तेज गति से बढती हुई इकोनमी के तौर पर चिन्हित किया गया था, लेकिन वर्ष 2023 के अन्त तक यह साफ हो गया था कि चीन ने उम्मीद से कमतर प्रदर्शन किया है, जबकि भारत की स्थिति उम्मीद से बेहतर रही है। ऐसी उम्मीद है कि भारत जी–20 देशो में सबसे तेज गति से बढती हुई इकोनमी रहने वाला है। इस समूह के सभी देशों की समग्र आर्थिक विकास दर वर्ष 2023 में 2.9 प्रतिशत

थी जो वर्ष 2024 में 2.4 प्रतिशत और वर्ष 2025 में 2.6 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। इस समूह के 3 देश ब्रिटेन, जापान और जर्मनी की विकास दर वर्ष 2024 में काफी नीचे आ चुकी है। ओकामुरा, उप प्रबन्ध निदेशक, आईएमएफ– वर्ष 2024 के दौरान भी एशियाई देश वैश्विक विकास का इंजन बने रहेंगे और यह वैश्विक वृद्धि में 60 प्रतिशत योगदान के लिए सही राह पर है। मार्गन स्टेनली– वैश्विक विकास में भारत का योगदान वर्ष 2021 में 10 प्रतिशत था जो वर्ष 2022 में बढकर 15 प्रतिशत हो गया था। इसके वर्ष 2023 से 2028 के मध्य 17 प्रतिशत रहने की संभावना है जबकि आईएमएफ के अनुसार वैश्विक वृद्धि में भारत का योगदान वर्ष 2023 में 16 प्रतिशत था।

भारत : विश्व की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था

वर्तमान में अधिकांश विकसित देशों की अर्थव्यवस्थायें आर्थिक मंदी, ऊँची मुद्रा स्फीति और बूढी होती आबादी से जूझ रही है, लेकिन बीते 10 वर्षो के दौरान भारत की इकोनमी वार्षिक आधार पर 7 प्रतिशत की दर से बढी है। राजीव सन्याल– ''आज भारत 3.7 ट्रिलियन डालर, जापान 4.1 ट्रिलियन डालर और जर्मनी 4.7 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था है। भारत वित्त वर्ष 2024–25 में 4 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बन जायेगा। जापान की अर्थव्यवस्था बढ नही रही है। इसलिए वित्त वर्ष 2025–26 में भारत जापान को पछाडकर चौथी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन जायेगा।'' अमिताभ कांत का भी यही मानना है कि वर्ष 2025 में भारत जापान को पछाडकर दुनिया की चौथी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। पीएचडीसीसीआई के अनुसार भारतीय इकोनमी के वित्त वर्ष 2024–25 में 4 ट्रिलियन डालर पार हो जाने और वित्त वर्ष 2026–27 तक 5 ट्रिलियन डालर हो जाने का अनुमान है। एसबीआई इकोरैप– वर्ष 2014 के बाद से भारत जिस आर्थिक विकास यात्रा पर है उसके हिसाब से भारत पहले के अनुमान (वित्त वर्ष 2029–30) से 2 वर्ष पहले वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। वर्ष 2023 से 2027 के बीच भारत की इकोनमी में आस्ट्रेलिया की अर्थव्यवस्था से ज्यादा की वृद्धि हो जायेगी। इस दर से भारत की इकोनमी में हर वर्ष 0.75 ट्रिलियन डालर (750 अरब डालर) की वृद्धि होगी जिससे वर्ष 2047 तक भारत 20 ट्रिलियन डालर (1 ट्रिलियन डालर = 1 लाख करोड डालर) की इकोनमी बन जायेगा। वर्ष 2027 तक शीर्ष 3 देशों की इकोनमी – अमेरिका 31.09 ट्रिलियन डालर, चीन 25.72 ट्रिलियन डालर और भारत 5.15 ट्रिलियन डालर बन जाने का अनुमान है। वर्ष 2027 तक उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र की इकोनमी का आकार 500 अरब डालर से ज्यादा हो जायेगा। इन राज्यों की इकोनमी का आकार वियतनाम और नार्वे जैसे एशियाई देशों और यूरोपीय देशों से ज्यादा हो जायेगा। आर्थिक समृद्धि के इस दौर की वजह से वैश्विक स्तर पर भारत की मजबूत पहचान बनेगी।

मार्गन स्टेनली ने अपनी रिपोर्ट में भारतीय पूँजी बाजार को ओवरवेट की श्रेणी में रखा है, जिसका अर्थ यह है कि भारत की इकोनमी अपनी श्रेणी के दूसरे देशों से बेहतर करेगी। एसएंडपी ने भारत को दुनिया का सबसे गतिमान और तेजी से बदलती हुई इकोनमी के तौर पर चिन्हित किया है। इसके अनुसार वर्ष 2024 से 2031 के बीच भारत की औसत आर्थिक विकास दर 6.7 प्रतिशत रहेगी और इसकी वजह से भारत मौजूदा 3.4 अरब डालर से बढकर 6.7 अरब डालर की इकोनमी बन जायेगा। विश्व बैंक ने वित्त वर्ष 2023–24 में उच्च वृद्धि के बाद 2024–25 से शुरू होने वाले 3 वित्त वर्षो के लए औसतन 6.7 प्रतिशत प्रति वर्ष की स्थिर वृद्धि का अनुमान लगाया है। बैंक के अनुसार भारत दुनिया की सबसे बडी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढने वाला देश बना रहेगा। आईएमएफ का भी अनुमान है कि जापान और जर्मनी को पीछे छोडकर वर्ष 2027 तक भारत विश्व की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनने वाला है। ऐसा होने पर भारत एशिया– प्रशांत क्षेत्र में दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। ईवाई का आकलन है कि वर्ष 2028 तक भारत की जीडीपी 5 ट्रिलियन डालर को पार कर जापान

और जर्मनी से आगे निकल जायेगी। ब्रोकरेज फर्म जेफरीज के अनुसार विकास दर में लगातार वृद्धि के चलते भारत वर्ष 2027 में तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन जायेगा। निर्मला सीतारमण– यह बहुत संभव है कि वित्त वर्ष 2027–28 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था हो जाये। तब भारत की इकोनमी का आकार 5 अरब डालर को पार कर जायेगा। जहॉ तक वर्ष 2047 की बात है तब तक अगर सामान्य तरीके से भी विकास किया जाये तो भारतीय इकोनमी का आकार 30 ट्रिलियन डालर से ज्यादा का होगा। एसएंडपी – जीडीपी में यह वृद्धि जारी रहती है तो वर्ष 2030 में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बडी आर्थिकी बन जायेगा।

डेलाइट इंडिया का मानना है कि वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनने के लिए भारत को हर वित्त वर्ष में कम से कम 6.5 प्रतिशत वृद्धि की जरूरत होगी। फिच रेटिंग्स ने 10 उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए मध्यम अवधि (वर्ष 2023 से 2027) में संभावित वृद्धि दर 4 प्रतिशत रहने, चीन में 4.6 प्रतिशत रहने और भारत में 6.2 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है, जबकि मार्गन स्टेनली के अनुसार वर्ष 2024 से 2028 तक भारत की इकोनमी औसतन 6.6 प्रतिशत की दर से बढेगी। क्रिसिल के अनुसार वित्त वर्ष 2023–24 से वित्त वर्ष 2030–31 के दौरान भारत की आर्थिकी की वृद्धि की औसत दर 6.7 प्रतिशत रहेगी जो कोरोना से पहले की औसत वृद्धि दर 6 प्रतिशत से ज्यादा है। एसएंडपी ने भारत में मध्यम अवधि (वित्त वर्ष 2023–24 से वित्त वर्ष 2025–26) में 6 से 7.1 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित की है, जबकि आरबीआई का मानना है कि भारत 25 वर्षो तक 7 प्रतिशत की विकास दर लगातार हासिल कर सकता है। क्रिसिल–6.7 प्रतिशत की औसत विकास दर रहने पर भारत वर्ष 2031 तक 7 ट्रिलियन डालर की इकोनमी के साथ उच्च मध्यम आय (विश्व बैंक के अनुसार उच्च मध्यम आय वाला देश वह होता है जिनकी प्रति व्यक्ति आय 4000–12000 डालर के बीच होती है) वाला देश बन जायेगा। वी अनंत नागेश्वरन– भारत को तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनाने में स्र्टाटअप महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगें। पिछले एक दशक के दौरान देश में स्टार्टअप परिदृश्य में एक असाधारण परिवर्तन देखा गया है। भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बडा स्टार्टअप इकोसिस्टम बनकर उभरा है। देश के 763 जिलों में 1.12 लाख से ज्यादा स्टार्टअप को मान्यता मिल चुकी है। इनके अनुसार 7in7 अर्थात 7 वर्षो में भारत 7 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बन जायेगा। बार्कलेज– वर्ष 2028 तक 8 प्रतिशत की विकास दर मिलने पर इस दशक के अंत तक भारत की इकोनामी का आकार 8 ट्रिलियन डालर का हो जायेगा जबकि वर्तमान में यह अनुमान 6.6 ट्रिलियन डालर का है।

वर्ष 2047 एवं विकसित भारत

प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य तय किया है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल के अनुसार भारत वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। बीवीआर सुब्रमण्यम (सीईओ नीति आयोग) – विकसित भारत सिर्फ एक सपना नही बल्कि एक संभावना है। यदि सभी राज्य विकसित हो जाये तो राष्ट्र भी विकसित हो सकता है। रूढिवादी अनुमानों से भी भारत वर्ष 2047 तक 30 ट्रिलियन वाली अर्थव्यवस्था वाला देश बन जायेगा। अतनु चक्रवर्ती – मजबूत खपत और निर्यात के दम पर भारत के वर्ष 2050 तक 30 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है। पीएचडीसीसीआई – वर्ष 2047 तक भारतीय इकोनमी 34.7 ट्रिलियन डालर की हो जायेगी। मुकेश अंबानी के अनुसार– दुनिया की कोई भी ताकत भारत को वर्ष 2047 तक 35 ट्रिलियन डालर की (विश्व की दूसरी सबसे बडी) अर्थव्यवस्था बनने से नही रोक सकती। माइकल देबव्रत पात्रा, डिप्टी गर्वनर आरबीआई – भारत अगले दशक में 10 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल कर सकता है। ऐसे में भारत वर्ष 2032 तक दुनिया की दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2050 तक सबसे बडी अर्थव्यवस्था बन सकता है। रोमल शेट्टी (सीईओ दक्षिण एशिया) – भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनने के लिए अगले 20

वर्षो तक 8–9 प्रतिशत की दर से बढने की जरूरत है। डेलाइट इंडिया– भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनने के लिए सलाना 8.9 प्रतिशत आर्थिक वृद्धि की जरूरत होगी। अमिताभ कांत – विकसित देश बनने के लिए भारतीय इकोनमी 3 दशकों तक 9–10 प्रतिशत की दर से बढ़नी चाहिए।

वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार का 4 आई दर ध्यान केन्द्रित है। इन्फ्रास्ट्रक्चर, इन्वेस्टमेंट, इनोवेशन, इंक्लुसिवनेस। भारत के पास पर्याप्त साधन है, निवेशकों के अनुकुल सुधार हो रहे है, बडी मात्रा में युवा आबादी है। भारत की प्रगति खराब बुनयादी ढ़ाचे के चलते बाधित रही है लेकिन हाल के वर्षो में भारत के बुनियादी ढ़ाचे में काफी सुधार हुआ है। विकास के लिए मोदी सरकार का सबसे अधिक फोकस सडक, हाइवे, रेल, बिजली, एयरपोर्ट और बदंरगाह जैसी इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाओं के विस्तार पर रहा है और यह आगे भी जारी रहेगा। यूपीए के शासनकाल में वित्त वर्ष 2004–05 से लेकर वित्त वर्ष 2013–14 के दौरान इन्फ्रास्ट्रक्चर पर 12.39 लाख करोड रूपये खर्च किये गये थे, जबकि वित्त वर्ष 2014–15 से वित्त वर्ष 2023–24 के अपने कार्यकाल के दौरान मोदी सरकार ने इन्फ्रा0 सुविधाओं के विकास दर 43.9 लाख करोड रू0 खर्च किये। वित्त वर्ष 2023–24 में इन्फ्रा0 पर 10 लाख करोड रू0 का प्रावधान किया गया था, जबकि वित्त वर्ष 2024–25 में 11.11 लाख करोड रू0 का प्रावधान किया गया है। वित्त वर्ष 2013–14 में पूँजीगत व्यय के मद में 187675 करोड रू0 का आवंटन किया गया था जो वित्त वर्ष 2023–24 में 10,00,961 करोड रू0 तक पहुँच गया था इस प्रकार इस अवधि में पूँजीगत व्यय में 5.33 गुणा की वृद्धि हुई। वित्त वर्ष 2023–24 में कुल बजट आवंटन में पूँजीगत व्यय की हिस्सेदारी 22.2 प्रतिशत रही। बुनियादी ढ़ांचे में निवेश वित्त वर्ष 2023–24 में जीडीपी के 5.3 प्रतिशत से बढकर वित्त वर्ष 2028–29 तक 6.5 प्रतिशत होने का अनुमान है। यह वृद्धि 15.3 प्रतिशत की मजबूत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाती है। इसके परिणाम स्वरूप अगले 5 वर्षो में 1.45 ट्रिलियन डालर का संचयी खर्च होगा।

भारत को विश्व की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनाने के लिए वित्त वर्ष 2026–27 तक पूँजीगत व्यय में बढोत्तरी का सिलसिला जारी रखना होगा, क्योंकि पूँजीगत व्यय के मद में खर्च होने वाला एक रूपया अर्थव्यवस्था को 4.8 रूपये तक बढाता है। इन्फ्रा0 निर्माण से लोगों को रोजगार मिलता है। रोजगार मिलने से वे खर्च करते है जिससे अन्य वस्तुओं की मांग निकलती है और फिर अन्य वस्तुओं का निर्माण होता है, जबकि राजस्व व्यय से 0.96 रूपये का गुणांक प्राप्त होता है।

आज भारत में बडे पैमाने पर मेट्रो, सडको, पुलो, हाइवे, रेलवे नेटवर्क, बंदरगाहों, एयरपोर्ट का निर्माण हो रहा है। यहॉ रोजगार के अवसर लगातार बनते रहेंगे, क्योंकि भारत में इन पर काम अभी शुरू ही हुआ है। अगर रोजगार सृजन के उक्त मायम सही तरीके से काम करते रहे तो लंबी अवधि में भारत की आर्थिक विकास दर 7.5 से 8 प्रतिशत तक जा सकती है। आज भारत जिस मुकाम पर दिखाई दे रहा है वहॉ तक पहुँचने में पिछले एक दशक से जारी सुधारो की एक लंबी श्रृंखला का अहम योगदान है। इन सुधारो के क्रम में यदि हम निरंतर आगे बढते रहे तो वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाना मुश्किल नही होगा।

निर्यात

वित्त वर्ष 2022–23 में भारत का कुल निर्यात 776.4 अरब डालर (451.1 अरब डालर का वस्तु निर्यात एवं 325.3 अरब डालर का सेवा निर्यात) का था, जबकि वित्त वर्ष 2023–24 में भारत का कुल निर्यात 778.2 अरब डालर (437.1 अरब डालर का वस्तु निर्यात एवं 341.1 अरब डालर का सेवा निर्यात) का रहा है लेकिन मुख्य बात यह है कि वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बावजूद वित्त वर्ष 2023–24 में कुल 238 गंतव्यों में से 115 देशों में भारत का निर्यात बढा है। वित्त वर्ष 2023–24 में वैश्विक निर्यात में भारत 17वें स्थान पर रहा है। वैश्विक व्यापार में

भारत की भागीदारी 1.8 प्रतिशत रही है। वर्ष 2023 में भारत का निर्यात 765.6 अरब डालर (431.9 अरब डालर का वस्तु निर्यात एवं 333.8 अरब डालर का सेवा निर्यात) का रहा है। (वर्ष 2022 में कुल निर्यात 720.2 अरब डालर का रहा था) भारत के मुख्य निर्यात गंतव्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, नीदरलैंड, बांग्लादेश, ब्रिटेन और जर्मनी है। भारत का वर्ष 2030 तक वस्तु निर्यात का लक्ष्य 1 ट्रिलियन डालर का है। वर्तमान में देश के 100 जिले 84 प्रतिशत वस्तु निर्यात करते है शेष 580 जिले सिर्फ 16 प्रतिशत वस्तु निर्यात करते है। 100 जिलों मे भी 10 जिले 38 प्रतिशत वस्तु निर्यात करते है।

जामनगर (12.18) सूरत (4.57), मुंबईसबअर्बन (3.75), मुंबई (3.70) पूणे (2.73) भरूच (2.37), कांचीपुरम (2. 36), अहमदाबाद (2.28), गौतमबुद्धनगर (2.18), बैगंलूर अर्बन (1.90) जबकि शेष 90 जिले 46 प्रतिशत वस्तु निर्यात करते है। इसी प्रकार केवल 10 राज्य 85.38 प्रशित वस्तु निर्यात करते हैं। गुजरात (30.05), महाराष्ट्र (17.33), तमिलनाडू (8.33), कर्नाटक (6.13), उत्तर प्रदेश (4.98), आंध्र प्रदेश (4.58), उडीसा (4.40), हरियाणा (3.68), बंगाल (3.29), तेलंगाना (2.61)।

निर्यात बढाने के उद्देश्य से देश के 73 प्रतिशत जिले अपनी निर्यात नीति बना चुके है और नीति आयोग पहाड़ी राज्यों की निर्यात मे हिस्सेदारी बढाने के प्रयास कर रहा है। यद्यपि वी अनंत नागेश्वरन के अनुसार ''इस सदी के पहले दशक के विपरीत निर्यात विकास का चालक नही होगा। कुछ समय के लिए घरेलू खपत विकास को गति देगी।'' मगर विकास में निर्यात का एक महत्वपूर्ण स्थान है।

सुझाव

वी अनंत नागेश्वरन (मुख्य आर्थिक सलाहकार) – देश को वर्ष 2030 तक 7–7.5 प्रतिशत की सतत विकास दर हासिल करने के लिए मैन्युफेक्चरिंग क्षेत्र पर ध्यान केन्द्रित करने की जरूरत है। बार्कलेज– 8 प्रतिशत की विकास दर हासिल करने के लिए भारत को बचत दर को जीडीपी के 30.2 प्रतिशत से 32.3 प्रतिशत पर लाना होगा, कामगारो की संख्या को 1 प्रतिशत से बढाकर 3.5 प्रतिशत करना होगा और इनमें महिलाओं की भागीदारी को बढाना होगा। (एसएंडपी – भारत की आर्थिक समृद्धि इसके 67.8 करोड श्रम बल (महिलाओं) के कंधे पर टिकी होगी। ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को कार्य क्षेत्र में लाना होगा। वर्ष 2022 में भारत की सिर्फ 24 प्रतिशत महिलायें काम करती थी) एवं वैश्विक निर्यात में हिस्सेदारी को 2.4 प्रतिशत से 4.5–5 प्रतिशत तक ले जाना होगा। अरंविद पानगठिया (चैयरमैन, 16वां वित्त आयोग) – भारत अगले 5 वर्षो में कुछ और सुधारों को लागू करके आपनी आर्थिक वृद्धि को मौजूदा 7 प्रतिशत से बढाकर 9 प्रतिशत के करीब पहुॅचा सकता है। भारत के लिए चीन दूसरा बडा आयातक है तो चौथा सबसे बडा निर्यातक है। चीन की मौजूदा स्थिति भारतीय इकोनमी के लिए चुनौतियॉ पैदा करेंगी तो साथ ही कुछ सम्भावनाओं के द्वार भी खोलेगी। कौशिक बसु (पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार) – पश्चिमी देशों और चीन के बीच बढ़ती हुई खाई को देखते हुए भारत वैश्विक स्तर पर अच्छी स्थिति में है। लोकतंत्र, स्वतन्त्र मीडिया एवं धर्मनिरपेक्षता से आर्थिक वृद्धि के लिए बुनियाद तैयार होती है। उन्होने उम्मीद जताई है कि भारत को खास बनाने वाले ये तीनों स्तम्भ देश पकडे रहेंगा।

निष्कर्ष

वर्तमान में यूएसए 25.5 ट्रिलियन डालर के साथ दुनिया की सबसे बडी अर्थव्यवस्था है। चीन लगभग 18.5 ट्रिलियन डालर की जीडीपी के साथ दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था है। जर्मनी 4.5 ट्रिलियन डालर के साथ तीसरे, जापान 4.2 ट्रिलियन डालर के साथ चौथे और भारत 3.7 ट्रिलियन डालर के साथ पॉचवें स्थान पर है। किसिल के अनुसार– सरकार की पूॅजीगत व्यय में वृद्धि (इन्फ्रास्ट्रक्चर के विस्तार) की नीति से विकास दर में मजबूती आ रही

है। मोदी सरकार की स्थिर नीतियों और आर्थिक सुधार के लिए उठाये गये कदमों से भी अर्थव्यवस्था को बल मिला है। वर्ष 2000 से 2023 के बीच 23 वर्षो में भारत में कुल 919 अरब डालर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) आया जिसमें से 595 अरब डालर का निवेश (65 प्रतिशत) मोदी सरकार के 8 से 9 वर्षो में आया है, भारत की जनसंख्या काफी अधिक है और उसमें युवा अच्छी खासी तादाद में है इसलिए यदि संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से इस क्षमता का इस्तेमाल किया जाता है तो इसमें मजबूत दर से बढने की क्षमता है। भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक वृद्धि का एक महत्वपूर्ण चालक बनने के लिए वैश्विक महामारी के बाद मजबूती से उभरी है। भारत की जीडीपी बढने का एक प्रमुख कारण इसका बडा और तेजी से बढता मध्यम वर्ग है जो उपभोक्ता खर्च को बढानें में मदद कर रहा है। भारत में वर्ष 2030 तक मध्यम वर्ग की आबादी 70 करोड और वर्ष 2047 तक 100 करोड हो जायेगी।

मेक इन इंडिया से लेकर प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेन्टिव (पीएलआई) स्कीम की बदौलत मैन्यूफेक्चरिंग का योगदान हमारे देश के विकास मे बढ रहा है। भारत में वैश्विक मैन्यू0 हब बनने की पूरी क्षमता है। डिजिटल विकास से अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिल रहा है। डिजिटल बाजार के विस्तार से भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम को प्रोत्साहन मिल रहा है। भारत में मजबूत लाजिस्टिक फ्रेमवर्क का निर्माण हो रहा है जिससे इस देश के विकास की बागडोर सर्विस सेक्टर की जगह मैन्यू0 के हाथ में चली जायेगी। एसएंडपी– हिंद प्रशांत क्षेत्र के विकास का केन्द्र अब चीन नही बल्कि भारत होगा, क्योंकि चीन की अर्थव्यवस्था अब सुस्ती की तरफ है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन, वियतनाम, इंडोनेशिया मलेशिया जैसे देशों की विकास दर भारत से कम रहेगी। मूडीज रेटिंग्स की रिपोर्ट के मुताबिक इंडोनेशिया, फिलीपींस और भारत 2024 की पहली छमाही में विकास के मामले में सबसे आगे रहेंगे और बढते निर्यात, स्थानीय मांग और बुनियादी ढांचे पर सरकारी खर्च के दम पर कोरोना पूर्व से बेहतर प्रदर्शन करना जारी रखेगें। मार्गन स्टेनली की रिपोर्ट के अनुसार यह दशक भारत का होगा। भारत तेज विकास दर हासिल करने की राह पर अग्रसर है। स्थिति यह है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में अगले एक दशक में जो इजाफा होगा उसमें 20 प्रतिशत हिस्सा अकेले भारत का होगा। वर्ष 2034 तक भारत की इकोनमी का आकार नौ ट्रिलियन डालर हो जायेगा।

सन्दर्भ सूची

1. दैनिक जागरण, मेरठ, 22 जून 2023 – 27 जून 2024
2. अमर उजाला, मेरठ, 22 जून 2023 – 27 जून 2024
3. दैनिक जनवाणी, मेरठ, 22 जून 2023 – 27 जून 2024
4. हिंदुस्तान, मेरठ, 22 जून 2023 – 27 जून 2024
5. दी इकोनोमिक टाइम्स, नई दिल्ली, 22 जून 2023 – 27 जून 2024
6. बिजनेस स्टैण्र्ड, नई दिल्ली, 22 जून 2023 – 27 जून 2024

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM